जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 101
अगस्त, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़ निम्नानुसार सदस्यता राशि

व्यक्तिगत वार्षिक	₹ 350/-	आजीवन व्यक्तिगत	₹ 3000/-
संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक	₹ 500/-	संस्था	₹ 5000/-

सदस्यता राशि प्रेषित करने के लिए ककसाड़ बैंक खाता विवरण

• खातेदार का नाम– **ककसाड़** • बैंक– **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खान मार्केट, दिल्ली**
• खाता संख्या– **3483675563** • आई.एफ.एस.सी. कोड– **CBIN0280310**
• एम.आई.सी.आर. कोड–**110016018**

विज्ञापन हेतु दरें

रंगीन		श्वेत/श्याम
फुल पेज (इनर)	₹ 15,000	₹ 10,000
बैक पेज कवर	₹ 25,000	—
बैक इनसाइड कवर	₹ 10,000	—
फ्रन्ट इनसाइड कवर	₹ 20,000	—
डबल स्प्रीड (इनर)	₹ 30,000	₹ 20,000

सहयोग राशि प्रेषित करने के बाद निम्नलिखित नंबर पर एस.एम.एस./फोन अथवा ई-मेल द्वारा तत्काल भेजें– 09968288050/09425258105/011-22728461, kaksaadeditor@gmail.com

कार्यालय---सी-54 रिट्रीट अर्पाटमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

ककसाड़ पत्रिका और लिटिल बर्ड प्रकाशन
की पुस्तके यहाँ भी उपलब्ध है:

1. मौर्या बुक स्टाल
बी.एच.यू गेट लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र.

2. राजू मैगजीन सेन्टर
दुकान न.1, ओम साई गेस्ट हाउस (SBI ATM के पास) लंका, वाराणसी -221005 उ.प्र.

3. दीवान न्यूज एजेंसी
सदर बाजार, झाँसी-284001 उ.प्र.

4. पंजाब बुक सेंटर
एस.सी.ओ. 1126-27, सेक्टर-22 बी, चंडीगढ़-160022 हरियाणा

5. लालमुनि बुक स्टाल
आर.एम.शाह चौक, पूर्णिया-854301 (बिहार)

6. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
110, ई- बंगला साहिब रोड, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

7. स्टूडेंड कॉर्नर
गोलघर सिनेमा रोड, गोरखपुर-273003 उ.प्र.

8. यूनिवर्सल बुक हाउस
शॉप न.17, विक्रम बिल्डिंग, लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र

9. गीता पुस्तकालय
दुकान न.17, श्री विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू, वाराणसी-221005 उ.प्र.

10. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
डिपार्टमेंट एल.सी, 4-ई/15, अशोक सेंटर झंडेवालान एक्स, नई दिल्ली-110055

11. इंडियन बुक डिपो
आदित्य भवन, प्रथम तल, बी.एन.वर्मा रोड अमीनाबाद पो.ऑ. के सामने, लखनऊ-226018 उ.प्र.

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

अगस्त 2024 **वर्ष-10 • अंक-101**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. कलाकार का धीरज से काम करना ही सफलता का मूल मंत्र है (आदिवासी गोंड कलाकार **मयंक सिंह श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

8. लोक आख्यान हरदौल में सांस्कृतिक मूल्य : **बहादुर सिंह परमार**

12. बरखा की आमद के पहले लौटने लगे हैं गाड़िया लोहार : **शिवाजी राय**

14. देखो खिल-खिल मुस्काता कदम्ब : **श्रीराम पुकार शर्मा**

17. आँचलिकता के सोपान और नागार्जुन... : **रंजीत कुमार पुष्पाकर**

20. गोंड समुदाय की समृद्ध विरासत : **डॉ. शामराव कोरेति**

23. विमुक्त जाति कंजर : **अरुण सातले**

कहानी

29. राग गंधर्व : **डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधुरी**

36. महाशक्ति : **वासुदेव**

कविता/शेर

40. अरुणिमा अरूण कमल 41. जयराम जय 42. डॉ. अवंतिका सिंह 42. सुरेन्द्र सोनी 'काकड़ौद' 43. दिनेश सिंदल

डायरी प्रकरण

25. बुढ़ऊ की डायरी : **भीष्म साहनी**

व्यंग्य

44. गूगल देव न होते तो : **डॉ. प्रदीप उपाध्याय**

लघुकथा

45. आदतें

पुस्तक समीक्षा/ पुस्तक चर्चा

46. विवेक और सरोकार : **डॉ. संध्या सिलावट**

48. आशीष दशोत्तर : **संजय परसाई 'सरल'**

24. **क्या है ककसाड़?**

28. **कहावतें**

35. **यादें**

49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - मयंक सिंह श्याम
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 70005-34256
सरई के पेड़ की छाल की डिजाइन को अपने चित्रों में लाते हैं।

संपादकीय

अगस्त का अंक आपके हाथों में है। अगस्त में यूँ तो देश के अधिकांश हिस्सों में मॉनसून अपने चरम पर होता है। ऐसे में हरियाली चूनर ओढ़े धरती का सौंदर्य देखते ही बनता है। यह कहना गलत ना होगा कि बस्तर इस सौंदर्य के मामले में देश की अन्य सभी भागों से ज्यादा धनी तथा भाग्यशाली है। यहाँ धान के हरे-भरे खेत, लहराते, फुसफुसाते साल के पेड़, मध्यम स्वर में गुनगुनाते-हरहराते बेशुमार छोटे बड़े झरने सब मिलकर एक ऐसा अद्‌भुत जादुई दृश्य प्रस्तुत करते हैं कि मनुष्य सम्मोहित हो जाता है। यूं तो बस्तर का मौसम लगभग बारहों महीने खुशगवार रहता है, किंतु इन दिनों यहाँ की जलवायु और भी सौम्य और सुहावनी हो जाती है।

अगस्त का महीना बस्तर सहित देश के बचे-खुचे जंगलों को नवजीवन देने का काम करता है। सूखे पड़े ठूंठों में भी नई कोपलें फूटने लगती हैं।

यह महीना भारत में विभिन्न प्रमुख तिथियों और त्योहारों के लिए भी जाना जाता है। देश का सबसे महत्वपूर्ण पर्व आजादी का महापर्व 15 अगस्त को मनाया जाता है, इसके अलावा भाई बहन के अटूट प्यार तथा पावन रिश्तों के निभाने का संकल्प पर्व 'रक्षाबंधन' भी इसी महीने में आता है। 16 कलाओं से परिपूर्ण भगवान श्री कृष्णा का जन्मोत्सव 'कृष्ण-जन्माष्टमी' भी अगस्त महीने में ही मनाई जाती है।

मेरा मानना है कि यह उद्धरण बस्तर के प्राकृतिक सौंदर्य और वहाँ के आदिवासी त्योंहारों की भव्यता तथा आनंद के संदर्भ में 'हेनरी डेविड थॉरो' का यह कथन बिल्कुल सटीक बैठता है कि,

"Heaven is under our feet as well as over our head"–

बस्तर का क्षेत्र अपनी विशिष्ट जनजातीय सांस्कृतिक पहचान और आदिवासी परंपराओं के लिए जाना जाता है। यहाँ के आदिवासियों के कुछ प्रमुख त्योहार भी इसी महीने में मनाए जाते हैं जो उनकी समृद्ध संस्कृति व परंपराओं को दर्शाते है। उनके त्योहारों में सबसे प्रमुख है अमूस-तिहार। छत्तीसगढ़ के अन्य भागों में इसे 'हरेली' व देश के अन्य भागों में हरियाली अमावस्या के नाम से जाना जाता है। यह त्योहार विशेष रूप से किसानों के कृषि कार्यों की शुरुआत का प्रतीक होता है। इस दिन आदिवासी अपने कृषि उपकरणों की पूजा करते हैं और अपने देवी-देवताओं से अच्छी फसल की कामना करते हैं। इस त्योहार के दौरान आदिवासी अपने देवी-देवताओं की पूजा आराधना तो करते ही हैं साथ में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, लोकनृत्य, गीत और खेल प्रतियोगिताएं होती हैं, जो कि यहां की विशिष्ट संस्कृति की झलक पेश करती हैं। इस त्योहार का पहला दिन देवी-देवताओं की आराधना में बीतता है दूसरे दिन आदिवासी विभिन्न प्रकार के पारंपरिक व्यंजन बनाते हैं और सर्वप्रथम अपने पितरों को और देवी देवताओं को यथासंभव यथाशक्ति भेंट, बलि, पूजा अर्पित किया जाता है। इसके बाद अपने प्रियजनों के साथ मिलकर आनंद मनाते हैं। इस त्योहार में भी अन्य जनजातीय त्यौहारों की भांति ही घर की बनी महुऐ की तेज शराब तथा चावल अथवा ज्वार,रागी आदि मिलेट्स से बनी हल्की नशे की पौष्टिक शराब जिसे लांदा कहा जाता है की प्रमुख भूमिका होती है। इफ्तार के लिए हफ्तों पहले से लांदा तथा शराब बनाने की तैयारी शुरू होती है

और त्योहार के दिन से लेकर लगभग एक हफ्ते तक यह सिलसिला कमोवेश जारी रहता है।

बस्तर के समस्त आदिवासी त्योहारों में प्रकृति के साथ जुड़ाव और समरसता का संदेश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रकृति के साथ इसी समरसता के बारे में ही 'जॉन मुइर' कहते हैं कि, "In every walk with nature, one receives far more than he seeks"

ये त्योहार न केवल यहाँ के आदिवासियों की धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि ये उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा भी हैं।इन त्योहारों के जरिए वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सजीव रखते हैं। इन त्योहारों में प्रकृति के प्रति इनका आदर और श्रद्धा का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है, जो हमें सिखाता है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य में जीना ही जीवन का वास्तविक सौंदर्य है।

इनके यह तिथि त्योहार हमें भी यह संदेश देते हैं कि हमें अपने पर्यावरण और संस्कृति के प्रति सदैव संवेदनशील और सम्मानजनक रहना चाहिए। विकास के सरपट दौड़ रहे रथ पर सवार होकर हम मानव जीवन का यह मूल-मंत्र ही भूल गए हैं। आपकी प्रिय पत्रिका ककसाड़ का भी सतत प्रयास यही रहा है कि हम प्रकृति पर्यावरण तथा मानव के तादात्म्य तथा समरसता के वो खोये अनमोल सूत्र तलाशें और उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के जस का तस शेष मानवता तक पहुँचाए। हम अपने इस महती लक्ष्य में कितना सफल हो पा रहे हैं यह तो हमें आपके पत्रों तथा संदेशों से ही पता चलता है। इसीलिए हमें आपके पत्रों, संदेशों का बेसब्री से इंतजार रहता है। तो एक बार फिर अब बारी है आपकी। यह अंक आपको कैसे लगा, और हम इसमें और क्या बेहतर कर सकते हैं इसके बारे में हमें तत्काल लिखकर भेजें। इसके साथ ही अगले अंक तक के लिए विदा!

आपका

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
मो. 94252-58105

कलाकार का धीरज से काम करना ही सफलता का मूल मंत्र है

(आदिवासी गोंड कलाकार **मयंक सिंह श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

परिचय– मयंक सिह श्याम

पाटनगढ़, मंडला, जिला डिंडोरी के मूल निवासी हैं। उनका जनजातीय गोंड कला में ख्याति प्राप्त नाम है। गोंड कला इन्हें विरासत में मिली है। इनके पिता जनगढ़ सिंह श्याम के बनाए गोंड कला के चित्र आदिवासी संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं। जिन्होंने अपने बनाए गोंड कला के चित्रों द्वारा इसे एक मुकाम तक पहुँचाया और गोंड कला में सर्वप्रथम कागज और कलम का प्रयोग किया। यह चित्रशैली 'जनगढ़ कलम' के नाम से विख्यात हुई। दुर्भाग्यवश जनगढ़ श्याम की असामयिक मृत्यु 2001 में हुई जब उनकी जापान में चित्रकला की प्रर्दशनी चल रही थी। मयंक श्याम जिस लगन, कल्पनाशीलता और धैर्य से पिता की इस विरासत को आगे ले चल रहे हैं वह काबिले तारीफ़ है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि इनकी माँ ननकुसिया श्याम, बहन जापानी श्याम भी गोंड कला की सिद्धहस्त कलाकार हैं और इस क्षेत्र में अपनी मजबूत जगह बनाई है।

पता– सी-165/1, निराला सृजन पीठ प्रोफेसर कॉलोनी, भोपाल-462002
मो. 70005-34256

प्र. मयंक श्याम जी आप अपनी चित्रकला के बारे में कुछ बताएं? कैसे आपकी रूचि इस ओर हुई?

उ. मेरी चित्रकला तो मुझे विरासत में मिली है। बचपन में पिता को धोती और बनियाइन में रंग, ब्रश और कैनवास के साथ देखा था। रंग ब्रश मेरा बचपन का खिलौना बना। फिर 14 वर्ष में पिता को खोने के बाद रंग ब्रश ही हमारी जीविका का आधार बना। यहाँ थोड़ा मैं गोंड कला के बारे में अपने पिता के योगदान को रेखांकित करना चाहूंगा कि जो कहा जाता है कि गोंड कला भित्ति चित्र से आई है। पर मैं मानता हूँ कि आज की गोंड कला की परिकल्पना मेरे पिता की है उसमें जे.स्वामीनाथन का बहुत बड़ा सहयोग रहा है।

प्र. आपने इस कला में क्या जोड़ा?

उ. मैंने अपने पिता की नकल तो नहीं की पर उनसे प्रेरणा बहुत मिली। जो मेरे चित्रों में देखा जा सकता है। वे कहते थे कि नकल नहीं करो बल्कि अपनी पहचान बनाओ। मैंने उस ओर ध्यान दिया और तमाम नए प्रयोग किए। मैंने अपने चित्रों की विशेषता बनाई सफेद पर काले रंग से चित्र बनाना। दूसरा हमारे यहाँ सरई का पेड़ होता है उसकी छाल की डिजाइन बीच-बीच में कट और लंबी लाइन होती है। मैंने उसे भी अपने चित्रों में अपनाया और उसे अपनी विशेषता बनाई।

प्र. आपके चित्रों के विषय क्या होते हैं? और उनमें कैसे रंगों का प्रयोग करते हैं?

उ. चित्रों के विषय हमारे देव, त्यौहार, शादी-ब्याह, उनमें गाए जाने वाले गीत, प्रकृति, जंगल, नदी, झरना आदि होते हैं। हमारे चित्रों में बनाने का स्टाइल अलग-अलग होता है। प्रकृति के रंग बदले होते हैं पर हमारे चित्रों की कुछ विशेषता दूर से ही नजर आती है। जैसे आकृतियों के साथ उनकी आँखें हमेशा बोलती हुई लगेंगी। हम कहानियों को भी चित्रों में उतारते हैं।

प्र. किसी कहानी का उदाहरण देकर बताएं ?

उ. हमें कोलकता की आर्ट गैलरी से चित्र बनाने का आर्डर आया। हम पूरा करने की धुन में थे कि उन लोगों ने कहा कि जिनके लिए चित्र बनवा रहे थे वह अभी विदेश गए हैं क्योंकि यहाँ बहुत गर्मी पड़ रही थी। अब वे मौसम बदलने पर आएंगे। मैंने सुना तो काम रोक दिया। एक दिन मैं शहर में ऊँची बहुमंजिला इमारत से निकलकर

कुसुमलता सिंह
प्रबंध एवं परामर्श संपादक, ककसाड़
मो. 99682-88050